International Journal of Sanskrit Research 2020; 6(4): 26-29

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(4): 26-29
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 14-05-2020
Accepted: 15-06-2020

डॉ. वेद प्रकाश मिश्रा
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
डॉ सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय
करगी रोड कोटा, जिला बिलासपुर,
छत्तीसगढ़, भारत

अनिल कुमार
एम.फिल्. संस्कृत सेमेस्टर द्वितीया
डॉ सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय
करगी रोड कोटा, जिला बिलासपुर,
छत्तीसगढ़, भारत

Corresponding Author:
अनिल कुमार
एम.फिल्. संस्कृत सेमेस्टर द्वितीया
डॉ सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय
करगी रोड कोटा, जिला बिलासपुर,
छत्तीसगढ़, भारत

मनुस्मृति के अनुसार संस्कारों का अध्ययन

डॉ. वेद प्रकाश मिश्रा और अनिल कुमार

सारांश
भारत वर्ष एक महान देश है, और इसकी प्राचीनता पूरी दुनिया में विख्यात है। इस देश के साहित्य, वेद, दर्शन,उपनिषद, बाम्हणग्रंथ एवं मनुस्मृति आदि नानाविद् साहित्य सम्पूर्ण जगत के कल्याण के लिए आज भी प्रासंगिक है। एक ओर जहां वेदो में ज्ञान, कर्म, उपसना तथा विज्ञान की बातें कही हैं वही दूसरी ओर उपनिषद आदि ग्रंथ मानव समाज को मोक्ष दिलाने का मार्गदर्शन करता है। मनुस्मृति जैसा पावन धर्मशास्त्र मानव जीवन को उन्नत बनाने का विधियों को लिए हुए समाज का प्रतिनिधित्व करता है। महर्षि मनु ने आदिकाल में मानव जीवन को उन्नत प्रगतिशील और संस्कारों में मानव धर्म के मापदण्डों के द्वारा राष्ट्र को सुबल और सुव्यस्थित बनाने का भी महत्वपूर्ण कार्य किया है। महर्षि मनु ने अपने ग्रंथ में मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त संस्कारों का वर्णन किया है, महर्षि मनु ने निःसंदेह सर्वोकृष्ट संस्कारों का व्यवस्था का सृजन किया है। आदिकाल के राजाओं को हम देखें राजा राम से लेकर युधिष्ठिर तक और जितने भी चक्रवर्ती सम्राट आर्यवर्त में हुए उन सभी की व्यवस्थाओं में संस्कार झलकता है। राजर्षि मनु ने अपने ग्रंथ मनुस्मृति में संस्कारों का वर्णन बड़े ही चारित्रिक और राष्ट्रनिर्माण का मुल मंत्र पिरोया है। ग्रंथकार अपने इस महान ग्रंथ के द्वारा मानव समाज को संगठित व उन्नत बनाने के लिए अनेक माध्यमों से संस्कारों की व्याख्या किये हैं। अपितु इस ग्रंथ में अनेक विषय है परंतु मैने अपने शोध का विषय मनुस्मृति में संस्कार लिया है। जिसको कई भागों में विभाजित कर उसके विषय में वर्णन किया जाएगा।

कूट शब्दः मनुस्मृति, दर्शन, उपनिषद, ब्राम्हणग्रंथ

प्रस्तावना
महर्षि मनु ने संस्कार में सभी के हितों का विशेष ध्यान रखा है चाहे वह किसी भी वर्ण का क्यों ना हो इसलिए मनुस्मृति में वर्णित संस्कार आज भी प्रासंगिक है। अपने विभिन्न आयामों के द्वारा संस्कार उत्थान के लिए यह ग्रंथ राष्ट्र का जीता जागता प्रमाण है। इसलिए संस्कार विधायक सूत्रों का प्रणयन महर्षि मनु ने आदिकाल से मानव जाति का विकास करने के लिए सर्व युगिन चित्र अंकित किया है। अपितु इस ग्रंथ में अनेक विषय है। परन्तु राष्ट्र निर्माण के लिए संस्कार सर्वोकृष्ट है इसलिए मैंने अपने शोध पत्र का विषय मनुस्मृति में संस्कार लिया है। जिसमें संस्कार के विविध विषयों को विभाजित कर उसके विषय में विस्तार से वर्णन किया जाएगा।

1. संस्कार
2. संस्कारों का महत्व
3. संस्कारों का उद्देश्य
4. संस्कारों की व्यस्था
5. हिन्दु धर्म में संस्कारों का स्थान
6. संस्कारों की उपयोगिता
7. मानव की शोभा संस्कारों से
8. संस्कार कहां कब और कैसे मिले
9. संस्कारों में शिक्षक का योगदान
10. संस्कार का अर्थ एवं परिभाषा

1. संस्कार
संस्कार शब्द का मूल अर्थ है, 'शुध्दीकरण'। मूलतः संस्कार का अभिप्राय उन धार्मिक कृत्यों से था

जो किसी व्यक्ति को अपने समुदाय का पूर्ण रूप से योग्य सदस्य बनाने के उदेश्य से उसके शरीर, मन और मस्तिष्क को पवित्र करने के लिये किये जाते थे, किन्तु हिंदू संस्कारों का उद्देश्य व्यक्ति में अभीष्ट गुणों को जन्म देना भी था। प्राचीन भारत में संस्कारों का मनुष्य के जीवन में विशेष महत्व था। संस्कारों के द्वारा मनुष्य अपनी सहज प्रवृतियों का पूर्ण विकास करके अपना और समाज दोनों का कल्याण करता था। ये संस्कार इस जीवन में ही मनुष्य को पवित्र नहीं करते थे, उसके परलौकिक जीवन को भी पवित्र बनाते थे।

संस्कारों हि नाम संस्कार्यव्य गुणाधानेन वा ।।
स्याद्योषाय नयनेन वा।। 1।।

अर्थात :– व्यक्ति में गुणों का आरोपण करने के लिए जो कर्म किया जाता है, उसे संस्कार कहते हैं।
ऋगवेद में संस्कारों का उल्लेख नहीं है, किंतु इसके कुछ सूक्तों में विवाह, गर्भाधान और अंत्येष्टि से संबंधित कुछ धार्मिक कृत्यों का वर्णन मिलता है।

हिरण्यी आरणी यं निर्भन्यतो अश्विना।
तं ते गर्भ हमाम हे दशमे मासि सूतवे स्वाहा।। 2।।

यजुर्वेद में केवल श्रौत यज्ञों का उल्लेख है, इसलिए इस ग्रंथ के संस्कारों की विशेष जानकारी नहीं मिलती, अथर्ववेद में विवाह, अंत्येष्टि और गर्भाधान संस्कारों का पहले से अधिक विस्तृत वर्णन मिलता है। गोपथ ब्राम्हमण और शतपथ ब्राहमण में उपनयन, गोदान संस्कारों के धार्मिक कृत्यों का उल्लेख मिलता है। तैत्तिरीय उपनिषद में शिक्षा समाप्ति पर आचार्य से दीक्षान्त शिक्षा मिलती है।

2. संस्कारों का महत्व

सनातन धर्म में संस्कारों का विशेष महत्व है। इनका उदेश्य शरीर, मन और मस्तिष्क की शुध्दि और उनको बलवान करना है जिससे मनुष्य समाज में अपनी भूमिका आदर्श रूप में निभा सके। संस्कार का अर्थ होता है– परिमार्जन–शुध्दिकरण। हमारे कार्य व्यवहार, आचरण के पीछे हमारे संस्कार ही तो होते हैं। ये संस्कार हमें समाज का पूर्ण सदस्य बनाते हैं। मनु और याज्ञवल्य, ने कुल 13 संस्कारों की चर्चा की है, लेकिन बाद में कुल 16 संस्कार बताए गए। इनमें तीन जन्म के पहले, आठ,जन्म के बाद विवाह तक विवाह और उपसंवेशन (वर–वधु मिलन) और अंत्येष्टि (श्राध्द) होते हैं। इस तरह भी कुल 13 ही संस्कार हुए। कुछ लोग विवाह और उपसंवेशन को एक ही मानते हैं। कुछ लोग वानप्रस्थ और संन्यासग्रहण के पहले होने वाले कर्मकांड को इसी में सामिल करते हैं। कुछ ग्रन्थों में श्राध्द को संस्कार माना गया है कुछ में नहीं, लेकिन आजकल इसे भी संस्कार माना जाता है। ये संस्कार पूर्वजन्म के दोषों का दूर करने और नये गुणों का समावेश करने के लिए किए जाते हैं, जिससे मनुष्य अपनी सहज वृत्तियों का विकास करके अपना और समाज का कल्याण कर सके।

दशमासाच्छश्यानः कुमारो अधि मातरि।
निरैतु जीवो अक्षतों जीवनत्या अधि।। 3 ।।

अर्थात – हे परमात्मा, दस माह तक माता के गर्भ में रहने वाला सुकुमार जीव प्राण धारण करता हुआ अपनी प्राण शक्ति सम्पन्न माता के शरीर से सुखपूर्वक बाहार निकले।
वृहदारण्यकोपनिषद् के अनुसार पुत्रोत्पति के उपरांत पिता प्रसूतिकाग्नि को प्रस्वलित करके एक कास्यं पात्र में दधि–धृत को मिश्रण करके वैदिक मंत्रो का पाठ करता था तथा शिशु के कान के पास मूँह को ले जाकर तीन बाट ''वाक्'' शब्द का उच्चारण करता था। तदतंतर उसकी भी जीभ में सोने की शलाका (चमच्च से) दधि–धृत–मधु का मिश्रण लगता था इस समय उपर्युक्त मंत्र का पाठ करता था ।

3. संस्कारों की उद्देश्य

संस्कारों के दो उद्देश्य थे, एक उद्देश्य तो प्रकृति में विरोधी शक्तियों के प्रभाव को दूर करना और हितकारी शक्तियों को अपनी ओर आकर्षित करना था, क्योंकिं प्राचीन हिंदूओं का भी अन्य प्राचीन जातीयों की भांती यह विश्वास था कि मनुष्य कुछ आदिमानव प्रभावों से घिरा हुआ है, इस प्रकार वह बुरे प्रभाव को दूर करके और अच्छे प्रभाव को आर्कर्षित करके देवताओं और इन अधिमानव शक्तियों की सहायता से समृध्द और सुखी रहेगा। संस्कारों के द्वारा वे पशु, संतान, दीर्घायु, संपत्ति और समृध्दि की आशा करते थे। संस्कारों के द्वारा मनुष्य अपने हर्षोल्लास को भी व्यक्त करता था।

आषोडशाद ब्राम्हणस्यानवीतः कालो भवति ।। 4।।
आद्वाविशाद. राजन्यस्य ।। 5।।
आचतुविशाद वैश्यस्य ।। 6।।

अर्थात् – तीव्र बुध्दि पाने की इच्छा से ब्राम्हण का पॉच बलवान क्षत्रीय का छः और कृषि आदि करने की इच्छा वाले वैश्य का आठ वर्ष की अवस्था में यह संस्कार करने का विधान है।
संस्कारों के द्वारा व्यक्ति पहले से अधिक संगठित और अनुशासित होकर एक चरण से दूसरे चरण में प्रवेश करता था। इस प्रकार प्रशिक्षण देकर व्यक्ति को समाज के लिए पूर्णतया उपयोगी बनाया जाता था। गुहस्थाश्रम मं योग्य संतान उत्पन्न करके पति–पत्नी समाज के प्रति अपना कर्तव्य पुरा करते थे, किंतु साथ ही वे अपनी निजी उन्नती भी करते थे। गुहस्थाश्रम भी वान्रपास्थ की और इसी प्रकार वानप्रास्थ संन्यास की पृष्टभूमि हैं। सभी आश्रम व्यक्ति को उस के लक्ष्य मोक्ष की ओर ले जाते हैं।

4. संस्कारों की व्यवस्था

संस्कार शब्द सम् पूर्वक कृ–धातु से घञ् प्रत्यय करके निष्पन्न होता है। संस्कार शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों में किया जाता है। संस्कृत वाङ्मय में इसका प्रयोग शिक्षा, संस्कृति, प्रशिक्षण, सौजन्यपूर्णता ,व्याकरण, संबंधी शुध्दि, संस्करण, परिष्करण, शोभा आभूषण, प्रभाव, स्वरूप, फलशक्ति, शुध्दिक्रिया, धार्मिक विधि विधा, अभिषेक, विचार, भावना, धारणा, कार्य का परिणाम, क्रिया की विशेषता, आदि व्यापक अर्थों में किया जाता है। अतः संस्कार शब्द अपने विशिष्ट अर्थ समूह को व्यक्त करता और उक्त सम्पूर्ण अर्थ इस शब्द में समाहित हो गये हैं। अतः संस्कार, शारीरिक, मानसिक, और बौध्दिक शुध्दि के लिए किये जाने वाले अनुष्ठानों का श्रेष्ठ आचार है। इस अनुष्ठान प्रक्रिया से मनुष्य की बाह्रयाभ्यन्तर शुध्दि होती है। जिससे वह समाज का श्रेष्ठ आचारवान् नागरिक बन सके।
हिन्दू संस्कारो में अनेक वैचारिक और धार्मिक विधियॉ समाविष्ट कर दी गयी है। जिससे बाह्रय परिसकार के साथ ही व्यक्ति के सदाचार की पुर्णता का भी विकास हो सकें। सविधि संस्कारों के अनुष्ठान से संस्कृत व्यक्ति में विलक्षण तथा अवर्णनीय गुणों का प्रभाव हो जाता है।

आत्मशरीरान्तरनिष्ठो विहितं।। 7।।
क्रियाजन्योअतिशिय विशेषः संस्कार।।
कार्यः शरीरसंस्कारः पावनः प्रेत्य चेहच।। 8 ।।

संस्कारों की संख्या संस्कारों के शास्त्रीय प्रयोग के सम्बन्ध में गृहयसूत्रों को ही प्रमाण माना गया है। प्राचीन गृह्यसूत्रों में पारस्कर गृह सूत्रो में अश्वलायन गृहय सूत्रों बोधायन विशेष रूप से प्रामाणीक रूप से संस्कारों अनुष्ठानों का विवरण,महत्व और मंत्रो का विवरण प्रस्तुत करते हैं। इनके अतिरिक्त पुराण साहित्य और विभिन्न स्मृतियॉ भी संस्कारों के आचार के संबंध तथा उनके महत्व का प्रतिपादन करती हैं। धर्मसूत्रों और धर्मशास्त्रों के भी इनके समन्वित रूपों का प्रतिपादन किया गया है। विभिन्न गृहसूत्रों एवं

स्मृतियों में संस्कारों की संख्या में मतैक्य नहीं हैं तदपि परवर्ती काल में संस्कारों की संख्या का निर्धारण कर दिया गया। इन संस्कारों में जन्मपूर्व से लेकर बाल्यकाल के 10 संस्कार और शेष 6 शैक्षणिक तथा अन्तेष्टि पर्यन्त के संस्कार परिगणित हैं ।

1. गर्भाधान
2. पुंसवन
3. सीमन्तोन्नयन
4. जात कर्म
5. नामकरण
6. निष्क्रमण
7. अन्नप्राशन
8. चूड़ाकरण
9. कर्णवेध
10. विद्यारम्भ
11. उपनयन
12. वेदारंभ
13. केशान्त
14. समावर्तन
15. विवाह
16. अन्तेष्टि

5. हिंदू धर्म में संस्कारों का स्थान

संस्कारों का हिंदू धर्म में महत्वपूर्ण स्थान था। प्राचीन समय में जीवन विभिन्न खंडों में विभाजन नहीं, बल्कि सरल था। सामाजिक विश्वास कला और विज्ञान एक– दूसरे से सम्बंधित थे। संस्कारों का महत्व हिंदू धर्म में इस कारण था कि उनके द्वारा ऐसा वातावरण पैदा किया जाता था, जिससे व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास हो सके।

हिंदुओं ने जीवन के तीन निश्चित मार्गों को मान्यता प्रदान की – 1. कर्म– मार्ग, 2. उपासना– मार्ग तथा 3. ज्ञान– मार्ग। यद्यपि मूलतः संस्कार अपने क्षेत्र की दृष्टि से अत्यंत व्यापक थे, किंतु आगे चलकर उनका समावेश कर्म– मार्ग में किया जाने लगा। वे एक प्रकार से उपासना– मार्ग तथा ज्ञान– मार्ग के लिए भी तैयारी के साधन थे।

कुछ मनीषियों ने संस्कारों का उपहास किया है, क्योंकि उनका सम्बन्ध सांसारिक कार्यों से था। उनके अनुसार संस्कारों द्वारा इस संसार सागर को पार नहीं किया जा सकता। साथ में हिंदू विचारकों ने यह भी अनुभव किया कि बिना संस्कारों के लोग नहीं रह सकते। आधार– शिला के रुप में स्वतंत्र विधि– विधान एवं परम्परा के न होने से चार्वाक् मत का अंत हो गया। यही कारण था, जिससे जैनों और बौद्धों को भी अपने स्वतंत्र कर्मकाण्ड विकसित करने पड़े।

पौराणिक हिंदू धर्म के साथ वैदिक धर्म का ह्रास हुआ। इसके परिणाम– स्वरुप, जो संस्कार घर पर होते थे, वे अब मंदिरों और तीर्थस्थानों पर किये जाने लगे। यद्यपि दीर्घ तथा विस्तृत यज्ञ प्रचलित नहीं रहे, किंतु संस्कार जैसे यज्ञोपवीत तथा चूड़ाकरण, कुछ परिवर्तण के साथ वर्तमान समय में भी जारी हैं।

6. संस्कारों की उपयोगिता

प्राचीन समय में संस्कार बड़े उपयोगी सिद्ध हुए। उनसे व्यक्तित्व के विकास में बड़ी सहायता मिली। मानव जीवन को संस्कारों ने परिष्कृत और शुद्ध किया तथा उसकी भौतिक तथा आध्यात्मिक आकांक्षाओं को पूर्ण किया। अनेक सामाजिक समस्याओं का समाधान भी इन संस्कारों द्वारा हुआ। गर्भाधान तथा अन्य प्राक्– जन्म संस्कार, यौनविज्ञान और प्रजनन– शास्त्र का कार्य करते थे। इसी प्रकार विद्यारम्भ तथा उपनयन से समावर्तन पर्यंत सभी संस्कार शिक्षा की दृष्टि से अत्यंत महत्व के थे। विवाह संस्कार अनेक यौन तथा सामाजिक समस्याओं का ठीक हल थे। अंतिम संस्कार, अंत्येष्टि, मृतक तथा जीवित के प्रति गृहस्थ के कर्तव्यों में सामंजस्य स्थापित करता था। वह तथा पारिवारिक और सामाजिक स्वास्थ्य विज्ञान का एक विस्मयजनक समन्वय था तथा जीवित सम्बन्धियों को सांत्वना प्रदान करता था।

7. मानव की शोभा संस्कारों से

संस्कारवान आदर पाता है, सम्मानित होता है। संस्कार विहिन मनुष्य कागज के फुल के समान है। जिस प्रकार तालाब की शोभा कमल से होती है, सभा की शोभा श्रोता से होती है, स्त्री के श्रंगार की शोभा उसके पति से होती है, घर की शोभा नारी से होती है उसी तरह से मनुष्य शोभनीय तभी होता है जब वह संस्कारित होता है। पुत्र सुपुत्र है या कुपुत्र है यह संस्कारों के माध्यम से ही प्रतीत होता है।

भारतीय संस्कृति की सभ्यता और पवित्रता मनुष्य के माध्यम से ही प्रचलीत है। मान का सोच और उसकी जीवन शैली पर सभ्यता और पवित्रता की रक्षा हो सकती है। जीवन शैली में अन्तर आ गया है, जीवन शैली में आधुनिकता आ गई और विचारों में भी आधुनिकता आ गई इसलिए संस्कृति पर बड़ी तेजी से आघात हो रहा है। जीवन शैली में ऐजुकेशन घुस गया परन्तु यह समझना बहुत जरूरी है कि जीवन शैली अपनी जगह है और ऐजुकेशन अप्नी जगह है। जीवन शैली को सुखद बनाने के लिए संस्कार आवश्यक है।

शिक्षा का अपना महत्व है परन्तु जीवन शैली में अगर शिक्षा आ जाता है तो व्यक्ति शान्तिपूर्ण ढंग से नही जी सकता है। जैसे एक वकील है वह घर में बच्चों के साथ और पत्नी के साथ वकील की भाषा बोलेगा तो पत्नी उसके पास नहीं रहेगी। वहाँ तो दाम्पत्य जीवन के अनुसार व्यवहार करना होगा और बच्चों को पिता का प्यार देना होगा।

8. संस्कार कहां – कब और कैसे मिले

माता–पिता से संस्कार मिलते हैं। जैसे कि हीरा जौहरी के पास जाने के बाद ही कीमती होता है और मिट्टी कुम्हार के पास जाने के बाद कुंभ (घड़ा) बनती है तथा घड़ा बनने के बाद उसमें जल धारण करने की समार्थता आ जाती है और मांगलिक हो जाता है। उसी प्रकार मनुष्य का जीवन माता–पिता से संस्कारित होकर आदर्श मनुष्य बन जाता है। संस्कार देने की उम्र बचपन से १० वर्ष तक की उम्र में जो संस्कार मिलेगें वैसा होगा। माता–पिता स्वयं संस्कारवान होते हैं तो बच्चे सन्तान भी अच्छी संस्कारित होती है।

कदली शिप भुजंग मुख, स्वाती एक गुण तीन।
जैसी संगती बैठिये, वैसा ही फल दीन।।

स्वाति नक्षत्र में आकाश से गिरने वाली एक जल की बूँद अगर केले के पत्ते पर गिरती है तो वह बूँद कपूर हो जाती है। वही बूँद अगर शीप में जाये तो मोती बन जाती है और अगर साँप के मुख में जाये तो जहर बनती है जैसी संगती मिलती है वैसी ही जल की बूँद बन जाती है उसी तरह से मनुष्य जिसके साथ रहता है। वैसा बन जाता है। क्योंकि संगत का असर होता है।

जैसे कोई व्यक्ति किसी इत्र की दुकान पर जाकर बैठा तो कुछ तो इत्र की खुशबू लेकर आयेगा, किसी शराबी की दुकान पर बैठेगा तो शराब की बदबू साथ आयेगी।संगती अच्छी हो या बूरी दोनों अपना असर छोड़ती है। इसलिए मित्रता जैसा होता है व्यक्ति वैसा ही बनकर रह जाता है। संगती का जीवन पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। जो संस्कार जीवन से किनारा कर जाते है परन्तु जीवन निर्माण के लिए संस्कार और संगती दोनों आवश्यक है। जैसे ट्रेन को चलने के लिए पटरी की आवश्यकता होती है। जीवन को अच्छा बनाने के लिए सज्जनों की संगती करनी चाहिए क्योंकि सज्जन सज्जनता देता है, दुर्जन दुर्जनता देता है । व्यापारी के पास बैठने से व्यापार की बुद्धि आती है सर्विस वाले के पास बैठने से लगता है सर्विस करना अच्छा है।

संत समागम हरि भजन, जग में दुर्लभ दोय।
सुतदारा ओर लक्ष्मी पापी के घर भी होय।।

अगर जीवन को खुबसूरत बनाना चाहते है तो संतो का समागम करो । खोटी संगती से अच्छे से अच्छा आदमी भी बूरा हो जाता है। जैसे नदी कितनी पवित्र होती है परन्तु जव वह समुद्र में मिल जाती है तो अपनी पवित्रता अपना अस्तित्व खतम कर देती है उसी प्रकार मानव बूरी संगती करके अपना सब कुछ मिटा देता है । नाली का पानी गर्मी के दिनों की तपन से पानी भाप बनकर शुद्ध जल बनकर आता है। उसी प्रकार खोटा व्यक्ति भी अच्छी संगती में बैठता है तो अच्छा इन्सान हो जाता है परन्तु उसे थोड़ा श्रम तो करना पड़ता है परन्तु वह अच्छा इंसान हो जाता है।

9. संस्कार में शिक्षक का योगदान

जीवन का प्रारम्भ संस्कार और संगती से होता है दोनों ही अच्छे मिल जाये तो मानव आदर्श हो जाता है। जब बच्चा शिक्षा लेने जाता है वहाँ उसे शिक्षक आदर्श मिल जाये तो सोने में सुहागा हो जाए। शिक्षक अपने नामोरुप हो जाये तो फिर जीवन निखर कर आता है। शिक्षक शब्द में कितने ही गुण है। इसमें तीन अक्षर है –शि,क्ष,क।

''शि'' का अर्थ है–शिष्टावान। ''क्ष''का अर्थ क्षमावान। ''क'' का अर्थ कर्तव्यमान अर्थात् जो शिष्टा वान,क्षमावान, कर्तव्यवान होता है वही अच्छा और सच्चा शिक्षक है। शिक्षक शिष्ट है सदाचारी है तो शिक्षा अच्छी देगा और जीवन का निर्माण अच्छा करेगा। क्योंकि शिक्षक भी माता के तुल्य होता है योग्य सलाह देकर उत्थान करता है।प्रारम्भ का जीवन तो एक कच्ची मिट्टी की तरह होता है परन्तु कुम्हार के पास ही एक अच्छे घड़े का रूप ले लेता है। वैसे ही मनुष्य अच्छे शिक्षक के पास जाता है तो अच्छा और आदर्श व्यक्तित्व का धनी हो जाता है। जीवन में कोई साधु संत मिल जाये और मंगल भावना आ जाये तो संत के चरणों में पाप का प्रक्षालन कर देना ताकि पापों से आत्मा मुक्त हो जाये। जीव का अगला भव और वर्तमान जीवन को सुधारना चाहते है तो संतो की दो मिनट भी संगती कर लेना ताकि जीवन सुवाषित हो सके। बच्चों पर अल्पायु में ही संस्कार कैसे करे? संस्कार की नींव अर्थात अनुशासन। प्रत्येक कृतिके यदि यदि अनुशासन, नियम नहीं बनाए, तो वह कृति अपूर्ण होती है। प्रातः उठने से लेकर रात्रि सोने तक अनुशासन का अचूकता से पालन करें, अध्यात्म में शीघ्र प्रगति होती हैं। उसके लिए बाल्यावस्था में ही अनुशासन का संस्कार बालमनपर अंकित करना चाहिए।

10. संस्कार का अर्थ एवं परिभाषा

धर्मशास्त्रों में संस्कारों का अर्थ परिभाषा एवं स्वरूप का वर्णन किया गया है। प्रकृति से उत्पन्न होने वाली वस्तु प्राकृत कहलाती है।

"गुणदोषमयं सर्व स्रष्टा नजति कौतुकी"

इसके अनुसार सर्वत्र गुण–दोषों का सम्मिश्रण देखा जाता है। व्यक्ति को परिष्कृत करने के लिए संस्कारित करने के लिये जो पद्धति अपनाई जाती है, उसे ही संक्षेप में संस्कार कहते हैं।

11. सन्दर्भ

1. गुरू आदि शंकराचार्य श्री ब्रम्हसूत्र भास्य सन् 1910 प्रकाशक श्री वाणी विलास प्रेस श्रीरंगम तमिलनाडु अ.1 म. पृ.10।
2. सरस्वती दयानन्द ऋग्वेद भास्य प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली म. 10 पृ. 124।
3. सरस्वती दयानन्द ऋग्वेद भास्य प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली मण्डल 5 म. 75 पृ. 140।
4. आचार्य जयराम पारास्कर गृहसूत्राणि सन 1851 प्रकाशक खेमराज श्री कृष्णदास मालिक श्री वेंकेटेश्वर टीम प्रेस मुम्बई अ. 02 सूत्र 05 पृष्ठ 36।
5. आचार्य जयराम पारास्कर गृहसूत्राणि सन 1851 प्रकाशक खेमराज श्री कृष्णदास मालिक श्री वेंकेटेश्वर टीम प्रेस मुम्बई अ. 02 सूत्र 06 पृष्ठ 36।
6. आचार्य जयराम पारास्कर गृहसूत्राणि सन 1851 प्रकाशक खेमराज श्री कृष्णदास मालिक श्री वेंकेटेश्वर टीम प्रेस मुम्बई अ. 02 सूत्र 08 पृष्ठ 38।
7. मिश्र मित्र श्री वीर मित्रोंदयः सन 1913 चौखम्बा संस्कृत सीरिज आफिस वाराणसी पृष्ठ 19।
8. कुमार डॉ. सुरेन्द्र प्रोफेसर विशुद्ध मनुस्मृति 1996 प्रकाशक आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट खारी बावली दिल्ली अ. 2 श्लोक 26 पृष्ठ 80।